Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
August, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

हिन्दी दलित कहानियां सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य

डॉ॰ ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

इसमें कोई दो राय नही है कि दलित और गैर-दलित कहानी में पर्याप्त अंतर है। यह सच है कि दलितों द्वारा दलित लेखन एक ऐसा यथार्थ है जिसमें अनुभव की गहराई और जीवंतता विद्यमान है। आज के भौतिकतावादी युग में दलित समाज जातीय-विषमता, यंत्रणा एवं पीड़ा को दैनंदिन जीवन में अनुभव करता है। मध्यकालीन सांमती व्यवस्था ने दलितों को रोजी-रोटी, नौकरी, व्यवसाय एवं उत्पादन के साधनों से पूर्णतयाः वंचित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐसे में दलितों की सृजनात्मकता में यह प्रभाव रेखांकित होना स्वाभाविक व अपेक्षित है। जहां तक दलित कहानियों में सामाजिक समस्याओं के चित्रण का सवाल है, ये कहानियाँ समाज की विद्रूप स्थितियों को उजागर करने में पूर्णतयाः सफल हुई है।

ओमप्रकाश बाल्मीकि दलित चेतना के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। 'सलाम' बाल्मीकि की एक सशक्त कहानी है, जो ऊँच-नीच, छुआ-छूत और भेदभाव की स्थितियों को उजागर करती हुई समाज की वर्तमान स्थिति पर प्रभाव डालती है। 'सलाम' कहानी वर्ण-व्यवस्था की बुराइयों को परत-दर-परत उघाड़ती है। शूद्रों में शूद्र एक अत्यंत जाति 'चूहड़ा' को केन्द्र में रखकर यह कहानी लिखी गई है। कहानी एक बड़ा प्रश्न खड़ा करती है कि सिर पर मैला ढोने वाली तथाकथित निम्नजाति के लोग हिन्दू है या इसको हेय दृष्टि से देखने वाले कथित सवर्ण, वर्ग में दोनों के बीच गहरी खाई है, फिर दोनों हिन्दू कैसे हो सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नही कि 'सलाम' कहानी व्यक्ति और समाज के मन-मस्तिष्क के गहरे तक समाये हुए जातिवाद की समूची श्रृंखला का विवेचन करती है। वस्तुतः 'समाजवादी मनुष्य का निर्माण तब तक नहीं हो सकता जब तक उसके अवचेतन तक नहीं पहुंचा जाता और उसे परिवर्तित नहीं किया जाता। चिकित्सा शास्त्र मनोविश्लेषण आदि केवल मानसिक बीमारियां ठीक कर सकते हैं परन्तु ये मनुष्य का दिमाग नहीं बदल सकते। यह काम साहित्य और कला का है। शिक्षा और दर्शन का है। वर्तमान समय में ओमप्रकाश बाल्मीकि की शवयात्रा विशेष चर्चा में रही है। दलितों के उपजातीय भेद को उजागर करती हुई यह कहानी अनेक सवाल छोड़ती है। 'सैंकड़ो जातियों और उपजातियों में विभाजित भारतीय समाज में दलित वर्ग भी अनेक जातियों और उपजातियों में विभाजित है और उसके अंदर भी आपसी भेदभाव कम नहीं है। चमारों में रैदास, जाटव, धूसिया बगैरह सैंकड़ों शाखाएं है। बाल्मीकियों में बतहर, होम, मेंहतर, भंगी जैसी शाखाएं मौजूद हैं। बाल्मीकि भंगियों में वैसे ही सुपर है जैसे चमारों में जाटव परन्तु दलित या अनुसूचित शब्द में ये सब समान है। कथाकार बाल्मीकि जी ने 'शवयात्रा' कहानी में चमारों की बल्हारों भंगियों) के

Airo International Research Journal
Volume XII, ISSN: 2320-3714
August, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

बदरंग छवि को प्रस्तुत करने वाली यह एक सशक्त कहानी है। सुशीला टाकभौरे दलित कहानीकारों में अग्रणी है। 'सिलिया' उनकी श्रेष्ठ कहानी है। सिलिया भंगी समाज की गुणवंती, होनहार लड़की है। पढ़-लिखकर समाज को ऊँचा उठाने का सपना उसकी महत्त्वाकांक्षा है जिसके लिए वह दृढ संकल्प है।

डॉ. कुसम वियोगी का कहानी संग्रह 'चार इंच की कलम' (1996) में प्रकाशित हुआ। संग्रह की अधिकांश कहानियां दलित समाज के यथार्थ को प्रभावी रूप में अंकित करती है। वह पढ़ गई है' एक दलित लड़की की कहानी है। कहानी का यह संदेश ही उसकी सफलता है। 'चार इंच की कलम' बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। स्कूली बच्चे निम्न जाति के बच्चों से कैसा कष्टकारी व्यवहार करते है। इतना ही नही संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त अध्यापक भी उन्हीं बच्चों का साथ देते है जो सम्पन्न है। परिणामस्वरूप शिक्षिकों के अनुदार आचरण के चलते दलित बच्चों को स्कूल से निष्कासित होना पड़ता है। मार-पीट और झगड़े के बाद स्वाभिमानी बालक यह सोचने को विवश होता है कि समाज में चारों और जातीयता की दुर्गंध फैली हुई है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि दलित कहानीकारों ने विपरीत सामाजिक परिस्थितियों से मुठभेड़ करते हुए दलित संघर्ष की भावना को जन्म दिया है | आज दलित चेतना को केंद्र में रखकर अनेक कहानीकार रचना कर्म में लीन है |

संदर्भ सूची ----------

1. कथादेश, मई, 2014, पृ. 45
2. रजत रानी 'मीनू', हिन्दी दलित कथा साहित्य, धारणाएं और विधाएं, अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली 2008 पृ. 208.
3. हंस, अगस्त 1996, पृ. 29
4. हंस अक्तूबर 1994, पृ. 29
5. कमलेश्वर, दूसरी दुनिया का यथार्थ (भूमिका)
6. मोहनदास नैमिशराय, दूसरी दुनियां का यथार्थ, अपना गांव, पृ. 71, 1997
7. हंस, सितम्बर-1999, पृ. 69
8. कथादेश, अक्टूबर 2000, पृ.35
9. डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन, युद्धरत आम आदमी, अंक 38, 1993
10. डॉ. प्रेमलता चुटैल, स्मारिका दलित एवं दलित चेतना सम्मेलन, सा. अ. भोपाल, 1998, पृ.47